Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VIII ISSUE- II FEBRUARY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

वाल्मीकि रामायण में वर्णित अराजक राष्ट्र की दुर्दशाएँ

राहुल
शोध-छात्र
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरि.)

राजा कौन होता हैः-

राजा किसी भी राष्ट्र का नायक व रक्षक होता है। राष्ट्र की सुख-समृद्धि पूरी तरह से राजा पर निर्भर करती है। सच्चे अर्थों में वही राजा कहलाते का अधिकारी है, जो शुभ गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त, पक्षपात-रहित होकर न्याय करने वाला हो। जिस प्रकार एक पिता अपनी संतान का पालन करता है, उसी प्रकार राजा अपनी प्रजा को पुत्रवत् (संतान की तरह) मान कर हमेशा उसकी उन्नति व सुख बढ़ाने का प्रयत्न करे।

राजा की आवश्यकता-

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि में राजा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। राजा की विदेश नीति कैसी है? सैन्य व्यवस्था, न्याय व्यवस्था आदि किस प्रकार के हैं? ये सब राष्ट्र की उन्नति के मूल तत्त्व हैं। अगर उपर्युक्त सभी व्यवस्थाएँ राजा सुंदर ढंग से चलाता है, नागरिकों की सब मूलभूत आवश्यकताएँ समय पर सही तरीके से पूरी होती हैं तो राष्ट्र उन्नति करता है तथा प्रजा राजा से प्रसन्न रहती है। अगर स्थिति इसके विपरीत है तो राष्ट्र कदापि उन्नति नहीं कर सकता।

राजा के गुण-कर्म-

राजा के गुणों के विषय में चाणक्य-नीति में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः।
राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः।।[1]

अर्थात् राजा को धर्मात्मा होना चाहिए। क्योंकि राजा के धर्मात्मा होने पर प्रजा भी धार्मिक होती है। राजा के पापी होने पर प्रजा भी पाप-परायण हो जाती है और राजा के उदासीन होने पर प्रजा भी उदासीन हो जाती है। क्योंकि प्रजा राजा का अनुसरण करने वाली होती है। जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है।

इस विषय में विदुरनीति का भी प्रमाण मिलता है-

नाममात्रेण तुष्यते छत्रेण च महीपतिः।
भृत्येभ्यो विसृजेदर्थान्नैकः सर्वहरो भवेत्।।[2]

अर्थात् राजा को चाहिए कि वह नाम-मात्र से अथवा राजछत्र-मात्र से संतुष्ट रहे। राज्य के ऐश्वर्य को सेवकों के साथ बाँट कर उपभोग करे। अकेले ऐश्वर्य भोगने वाले राजा के सेवक उसके शत्रु बन जाते हैं, तथा उसको नष्ट कर देते हैं।

अराजक राष्ट्र क्या होता है-

ऊपर हमने राजा कौन होता है? तथा राजा क्यों आवश्यक है? इन विषयों पर विचार किया। राजा राष्ट्र का रक्षक होता है, प्रजा का पालन करने वाला होता है आदि परिस्थितियाँ तो उस राष्ट्र की हैं जिसमें राजा होता है। अगर कोई राष्ट्र राजा रहित हो तो उसकी क्या स्थिति होगी? इस विषय पर वाल्मीकि रामायण में विशेषतया प्रकाश डाला गया है। अयोध्या कांड में हमें राजा-रहित राष्ट्र (जिसको वाल्मीकि रामायण में अराजक राष्ट्र नाम से संबोधित किया गया है) की विशेष चर्चा मिलती है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जिस राष्ट्र में राजा ना हो, वह अराजक राष्ट्र होता है।

अराजक राष्ट्र की दुर्दशाएँ-

वाल्मीकि रामायण लौकिक संस्कृत-साहित्य का आदि ग्रंथ है। इसी कारण इसको आदिकाव्य तथा इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि कहा

जाता है। रामायण में कुल 7 काण्ड तथा लगभग 25,000 श्लोक हैं। पुत्र-वियोग में जब महाराज दशरथ का स्वर्गवास हो जाता है, तथा चारों राजकुमार राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न राज्य से बाहर होते हैं, उस वक्त समस्त मंत्रीगण एकत्रित होकर राजपुरोहित महर्षि वशिष्ठ जी के पास जाते हैं। वो सब उनसे जाकर कहते हैं कि ऋषिवर आप शीघ्रातिशीघ्र किसी इक्ष्वाकुवंशी को राजा नियुक्त करके इस राष्ट्र को नष्ट होने से बचा लीजिए। इसी क्रम में हमें राजा-रहित राष्ट्र की दुर्दशाओं का विशद वर्णन मिलता है।

राजा राष्ट्र का शासक होता है वह सब के लिए नियम निर्धारित करता है। समस्त प्रशासनिक अधिकारी राजा के आदेश के अनुसार अपना कार्य सम्पन्न करते हैं। अधिकारियों को भय रहता है कि यदि वो अपने कार्य में किसी प्रकार की अनवधानता करेंगे तो प्रजा की शिकायत पर राजा उनको दंडित करेगा तथा पद से हटा भी सकता है। इसी भय से वे अपना कार्य सही ढंग से करते हैं तथा सभी सरकारी योजनाओं का लाभ प्रजा को प्राप्त होता है। अगर राज्य में कोई राजा नहीं होगा तो राज-कर्मचारी भयमुक्त हो जाते हैं तथा अपनी स्वेच्छा से कार्य करते हैं। इस स्थिति को वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार बताया है कि-

जनपदे नाराजके योगक्षेमः प्रवर्तते।।[3]

अर्थात् अराजक राष्ट्र में अप्राप्त वस्तुओं की प्राप्ति तथा प्राप्त की रक्षा नहीं होती।

इसी प्रकार राजा-रहित राष्ट्र में कृषकों को अपनी फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। जिससे वो खेती के काम में नाखुश रहते हैं। उनको भय रहता है कि पता नहीं फसल का उचित मूल्य मिल पाएगा या नहीं। ये भी देखा जाता है कि प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित कृषकों को राजा द्वारा उचित मुआवजा दिया जाता है। राजा-रहित राष्ट्र में कृषकों को यह भी भय रहता है कि यदि ओलावृष्टि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि या अन्य किसी प्राकृतिक आपदा से उनकी खेती नष्ट हो जाती है तो राजा के अभाव में किसी प्रकार की वित्तीय सहायता की भी आशा नही है। इस भय के कारण कृषक कृषि कार्य में रुचि नहीं लेते। वाल्मीकि रामायण में भी इसका वर्णन इस प्रकार मिलता-

नाराजके जनपदे बीजमुष्टिःप्रकीर्यते।।[4]

अर्थात् अराजक राष्ट्र में किसान खेतों में बीज नहीं डालते। खेती न करने का कारण शायद उपर्युक्त ही होता होगा।

राजा का कर्तव्य सभी प्रजाजनों को सुरक्षा प्रदान करने का होता है। राजा को अपने राज्य में ऐसा माहौल रखना चाहिए जिसमें आबाल, वृद्ध, स्त्री-पुरुष खुद को सुरक्षित महसूस करें। उनको जान-माल का कोई भी खतरा नहीं होना चाहिए। प्रजाजन अपने घरों में सुरक्षित वातावरण में रह सकें, स्त्रियाँ आभूषणों से अलंकृत होकर सुरक्षित घूम सकें। किंतु अराजक राष्ट्र में स्थिति इसके विपरीत होती है। वहाँ आम आदमी खुद को असुरक्षित महसूस करता है। राजा के अभाव में आपराधिक ताक़तें पनपने लगती हैं तथा आपराधिक तत्त्व अपना साम्राज्य चारों तरफ स्थापित कर लेते हैं। राज्य के नागरिक सदैव भयभीत रहते हैं, उनको जान-माल के लुट जाने का भय रहता है। वाल्मीकि रामायण में इस स्थिति को इस प्रकार दर्शाया है-

अराजके धनं नास्ति भार्याप्यराजके ।
इदमात्याहितं चान्यात्कुतः सत्यमराजके।।[5]

अर्थात् अराजक राष्ट्र में प्रजा का धन सुरक्षित नहीं रहता, स्त्रियाँ व्यभिचारिणी हो जाती हैं। जब सब तरफ भय व आतंक का माहौल होता है तो सत्य का व्यवहार भी कदापि नहीं हो सकता।

राजा-रहित राष्ट्र में स्त्रियाँ सर्वदा भयभीत रहती हैं, स्त्रियाँ आभूषणों से अलंकृत होकर घरों से निकलना बंद कर देती हैं। वो स्वयं को घरों के अंदर भी असुरक्षित पाती हैं। वाल्मीकि रामायण में इसको इस प्रकार कहा है-

नाराजके जनपदे उद्यानानि समागताः।
सायाह्ने क्रीडितुं यान्ति कुमार्यो हेमभूषिताः।।[6]

अर्थात् अराजक राष्ट्र में कुमारियाँ आभूषणों से अलंकृत होकर क्रीड़ा करने के लिए सांयकाल वाटिका में नहीं जाती।

अक्सर देखा जाता है कि व्यापारी लोग व्यापार करने के लिए, वस्तुओं को खरीदने-बेचने के लिए अन्य देशों में आते-जाते हैं। किंतु राजा-रहित राष्ट्र में व्यापारी-वर्ग व्यापार करने या तो आते ही नहीं, अगर आते भी है तो वो लूट के भय से बहुत कम सामान लेकर आते हैं। रामायण में कहा है-

नाराजके जनपदे वणिजो दूरगामिनः।
गच्छन्ति क्षेममध्वानं बहुपण्यसमाचिताः।।[7]

जिस संन्यासी वर्ग का चहुँ ओर बड़ा मान-सम्मान होता है, समाज में जहाँ संन्यासी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है तथा उसको पूज्य माना जाता है, अराजक राष्ट्र में वो संन्यासी भी स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करता। इसका वर्णन इस प्रकार किया है-

नाराजके जनपदे चरत्येकचरो वशी।
भावयन्नात्मनात्मानं यत्र सांयगृहो मुनिः।।[8]

अर्थात् अराजक राष्ट्र में एकाकि विचरण करने वाला, आत्मा को परमात्मा में लगाने वाला मुनी संध्या-काल होने पर जहाँ चाहे वहाँ डेरा नहीं डाल सकता। सांयकाल के पश्चात् उसको किसी सुरक्षित स्थान पर निवास करना पड़ता है।

राजा का कर्तव्य बनता है कि राज्य में प्रजा के मनोरंजन के लिए समय-समय पर उच्चकोटि के कलाकारों, कवियों आदि को बुलाकर उनके कार्यक्रम आयोजित करे। ऐसे कार्यक्रमों से मनोरंजन के साथ-साथ राष्ट्रोत्थान तथा नैतिकता के विचार भी संप्रेषित किये जाते हैं। जिससे न केवल प्रजा का मनोरंजन हो अपितु उसके साथ-साथ प्रजाजनों में राष्ट्रीयता और नैतिकता के भाव जीवित रहें। राजा उन कलाकारों को उचित सम्मान राशि देता है, तथा समय-समय पर उनको सम्मानित भी करता है। जिससे उनका मनोबल बढ़ता है। परंतु राजा-रहित राष्ट्र में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन नहीं होता है तथा उचित सम्मान के अभाव में कलाकार नाखुश रहते हैं। इसका वर्णन वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार मिलता है-

नाराजके जनपदे प्रहृष्ट नटनर्तकाः।
उत्सवाश्च समाजाश्च वर्धन्ते राष्ट्रवर्धनाः।।[9]

अराजक राष्ट्र में न्याय-व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाती है। जिस प्रकार समुद्र में छोटी मछली को बड़ी मछली खाती है, उसी प्रकार अराजक राष्ट्र में बलवान् लोग कमजोर लोगों का शोषण करते हैं तथा उनको परेशान करते हैं। इसका वर्णन इस प्रकार मिलता है-

नाराजके जनपदे स्वकं भवति कस्यचित्।
मत्स्या इव नरा नित्यं भक्षयन्ति परस्परम्।।[10]

निष्कर्ष-

अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः।।[11]

अर्थात् राजा के अभाव में इस जगत् में चारों तरफ भय के कारण व्याकुलता फैल जाने पर समस्त समाज और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए प्रभु ने राजा पद बनाया है। अतः हम कह सकते हैं कि राष्ट्र को सुरक्षित करने के लिए राजा की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त अध्ययन से यही सिद्ध होता है कि जिस प्रकार बिना जल के नदी शोभायमान नहीं होती, बिना घास वन शोभा-रहित होता है तथा बिना गोपाल के गोवंश अनुशासित नहीं रह सकता। उसी प्रकार बिना राजा के राष्ट्र भी शोभा-रहित तथा अनुशासनहीन होता है।

संदर्भ सूची :-

1. चाणक्य-नीति, 13.07
2. विदुरनीति 06.26
3. वाल्मीकीय रामायण अयोध्या कांड श्लोक संख्या- 22 पृष्ठ संख्या- 154 संपादकः- स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती, विजयकुमार गोविंदराम हासानंद, नई सड़क दिल्ली से प्रकाशित।
4. वही' श्लोक संख्या- 08 पृष्ठ- 153
5. वही श्लोक संख्या- 09
6. वही श्लोक संख्या- 15
7. वही श्लोक संख्या- 20
8. वही श्लोक संख्या- 21
9. वही श्लोक संख्या- 13 पृष्ठ- 153
10. वही श्लोक संख्या- 25 पृष्ठ- 154
11. मनुस्मृति 07.03